Notes

व्यापक प्रक्रिया :- ज्ञान का स्वरूप एवं संरचना व्यापक रूप से देखी जाती है। इसके परिणाम स्वरूप ज्ञान का वर्गीकरण भी व्यापक रूप में किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति या छात्र अपने आवश्यकता के अनुरूप ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

प्राचीन काल से वर्तमान समय से भी यह समस्या बनी हुई है। क्योंकि ज्ञान एवं ज्ञान का दोनों ही व्यापकता से सम्बन्धित प्रक्रियाएँ है।

उपयोगी प्रक्रिया :- ज्ञान के वर्गीकरण की प्रक्रिया उपयोगी प्रक्रिया के रूप में जानी जाती है। इसके आधार पर छात्रों के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है।

जैसे मनोवैज्ञानिक सम्बन्धी सिद्धान्तों एवं नियमों के आधार पर छात्रों के लिए सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है, यह कार्य ज्ञान के वर्गीकरण के आधार पर किया जाता है। ज्ञान का वर्गीकरण, शिक्षक, छात्र एवं शिक्षालय सभी की दृष्टि से उपयोगी माना जाता है।

~~परिवर्तनशील~~ परिवर्तनशील प्रक्रिया :- ज्ञान के वर्गीकरण को एक परिवर्तनशील प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है।
जैसे सामाजिक आधार पर वर्गीकरण, विकास के आधार पर वर्गीकरण, उपयोगिता के आधार पर वर्गीकरण आदि

SK Sharma
14/10/2019

Scanned with CamScanner

Notes

वैज्ञानिक वैज्ञानिक प्रक्रिया :- ज्ञान के वर्गीकरण को वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। क्योंकि इसके प्रत्येक ज्ञानात्मक तथ्य को क्रमबद्धता एवं सुसंगठित रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

जैसे सामाजिक अध्ययन के लिए सभी ज्ञानात्मक तथ्य को संगठित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। जो समाज से सम्बन्धित है

~~कौशिक प्रक्रिया~~ →

विद्यालय मे और विद्यालय के बाहर ज्ञान

:- ज्ञान के केन्द्र मात्र विद्यालय ही नहीं वरन् बालक विद्यालय के बाहर भी ज्ञान प्राप्त करता है।

दूसरे शब्दो में बालक औपचारिक अनौपचारिक ज्ञान प्राप्त करता है। औपचारिक रूप से वह विद्यालय मे ज्ञान प्राप्त करता है अनौपचारिक रूप से विद्यालय के बाहर ज्ञान प्राप्त करता है।

विद्यालयों में ज्ञान → विद्यालयों मे ज्ञान औपचारिक व्यवस्था सम्भव होती है। जो कि इनकी निम्न लिखित विशेषतां होती है।

Notes

1. क्रमबद्ध ज्ञान
2. स्तरानुकूल ज्ञान
3. औपचारिक ज्ञान की व्यवस्था
4. प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
5. शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग
6. विशेष शिक्षण ~~अधिगम प्रक्रिया~~ विधियों का प्रयोग
7. विशेष पाठ्यक्रम की व्यवस्था
8. छात्र के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था

1- क्रमबद्ध ज्ञान :- विद्यालय में ज्ञान की क्रमबद्ध व्यवस्था सम्पन्न होती है इसमे ज्ञान को एक निश्चित कार्यक्रम एवं रूप रेखा के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है।

जैसे - विद्यालय में विषयों को उनकी उपयोगिता की ~~अनुसार~~ आवश्यकता के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है। हिन्दी, गणित, विज्ञान, समाजविज्ञान आदि।

2. स्तरानुकूल ज्ञान :- विद्यालय में जो ज्ञानात्मक व्यवस्था है वह छात्रों के स्तरों के अनुसार प्रदान की जाती है। विद्यालय में व्यवस्था के तत्वों को ध्यान में रखते हुए प्रभावशील बालकों को पृथक ~~पृथक~~ पृथक व्यवस्था के रूप ज्ञान देना चाहिए।

Notes

3 औपचारिक ज्ञान की व्यवस्था — विद्यालय में ज्ञान को औपचारिक व्यवस्था होती है, प्रत्येक विषय के लिए उसकी उपयोगिता के अनुसार समय सारणी निर्धारित किया जाता है। हर विषय के लिए अलग-अलग समय सारणी का प्रयोग किया जाता है।

प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया — विद्यालय ज्ञानात्मक व्यवस्था में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशील बनाने के लिए का प्रयास किया जाता है। इसके लिए शिक्षक द्वारा ~~उपायो~~ उपायो का प्रयोग मे लाया जाता है। जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया ~~काफी~~ काफी पूर्ण रूप से सम्पन्न हो छात्रो का अधिगम उच्च स्तर तक हो।

विशेष अधिगम समाग्री का प्रयोग — विद्यालयी ज्ञान व्यवस्था के प्रकरण के अनुसार शिक्षण अधिगम को प्रयोग किया जाता है। छात्र को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी हो अनुभव हो इसके लिए शिक्षक को शिक्षण समाग्री का प्रयोग करके भी प्रशिक्षण को प्रयोग किया जाता है।

Notes

विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग :- विद्यालयी व्यवस्था में छात्रों के स्तर के अनुकूल विशेष शिक्षण विधियों की प्रयोग व्यवस्था की जाती है। जैसे - प्राथमिक स्तर के छात्रों को शिक्षण के लिए खेल विधियों का प्रयोग करना उच्च स्तर के बालकों को समस्या - समाधान विधि का प्रयोग

विशेष पाठ्यक्रम की व्यवस्था :- विद्यालयी व्यवस्था में छात्रों की मानसिक योग्यता के उसके स्तर के अनुसार पृथक पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाती है। जिससे प्रतिभाशाली, समान्य पिछड़े बालक के रुचि के अनुसार पाठ्यक्रम ~~से~~ सक उपलब्ध हो सके

छात्र के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था - छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय में आवश्यक व्यवस्था में मानसिक विकास ~~सम्बन्ध~~ सम्बन्धी ज्ञान एवं शारीरिक विकास सम्बन्धी ज्ञान, किया जा सकता है। छात्रों का सर्वांगीण विकास ~~प्रसास्त~~ प्रशस्त होता है

Notes

विद्यालय के बाहर ज्ञान

1- अनौपचारिक व्यवस्था
2 क्रमबद्धता का अभाव
3 स्तरानुकूल ज्ञान का अभाव
4 विशेष प्रक्रिया का अभाव
5 विशेष प्रक्रिया का अभाव
6 विशेष पाठ्यक्रम का अभाव
7 विशेष शिक्षण विधियों का अभाव

Scanned with CamScanner